गुरु नानक – सबद ४१

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८

सलोकु ॥
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

सार: सृष्टि का प्रत्येक तत्व आपस में गुँथा हुआ है; इसलिए, उनका अस्तित्व सामूहिकता में पनपता है। विकासवादी दृष्टिकोण से, रिश्ते हमारे अस्तित्व के मूल में हैं। हमारा अस्तित्व दो व्यक्तियों के प्रजनन के संबंध पर आधारित है, उनकी संतान केवल प्रकृति में सृजन के अन्य रूपों के समर्थन से ही क़ायम रह सकती है। यह आपसी संबंध हर तत्व के प्रति सम्मान और ज़िम्मेदारी की मांग करता है, न केवल एक नैतिक कर्तव्य के रूप में, बल्कि जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे बनाए रखने के साधन के रूप में भी। उदाहरण के तौर पर जैसे इस सलोक में, हवा जो हमारे भौतिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, को गुरु के बराबर माना गया है। जो हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। जीवन को क़ायम रखने वाले पानी की तुलना जीवन प्रदान करने वाले पिता से की गई है। इसी तरह, जैसे पृथ्वी पोषण प्रदान करती है, उसकी तुलना पोषण करने वाली माँ के गर्भ से की गई है।

सलोकु ॥
सलोक ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
आध्यात्मिक जीवन को सुविधाजनक बनाने वाले गुरु के रूप में हवा का, जीवन प्रदान करने वाले पिता के रूप में पानी का और जीवन का पोषण करने वाली माँ के रूप में पृथ्वी का सम्मान करें।

दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
मर्दाना और स्त्री गुणों के आदान-प्रदान का सम्मान करें, ये दो पोषणकारी शक्तियां, जो सामूहिक रूप से दिन से रात में समय के संचालन का समर्थन करती हैं।

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
नैतिक कर्तव्य के रूप में व्यक्ति की चेतना में सकारात्मक काम और नकारात्मक काम का मूल्यांकन किया जाता है।

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
अपने करम के कारण से, कुछ लोग दिव्यता के करीब हो जाते हैं और कुछ दूर हो जाते हैं।

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
जिन लोगों ने ज्ञान की बातों पर विचार किया है, उनकी दृढ़ता ने आध्यात्मिक प्रगति का अभिनंदन किया है।

नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥
नानक कहते हैं कि ऐसे व्यक्तित्व प्रबुद्ध हैं, और उनकी संगत में कई लोग मुक्त हो चुके हैं। (१)

तत्त्व: गुरु नानक के प्रबुद्ध शब्द हमारी आध्यात्मिक यात्रा के लिए हमारी पसंद और करमों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वह कहते हैं कि सृष्टि का हर पहलू आपस में जुड़ा हुआ है, और हमारा व्यवहार सामाजिक अनुभूति से प्रभावित होता है, जो या तो प्रगतिशील या प्रतिगामी हो सकता है। अपने करमों पर चिंतन करके और स्वयं को प्रबुद्ध व्यक्तियों के साथ जोड़कर हम अपना व्यक्तिगत विकास कर आध्यात्मिक मुक्ति की ओर बढ़ सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com